चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 7-8-25 | 4 | 2-5 |

# जीवाणु खाद मिट्टी की उपजाऊ शक्ति और पैदावर बढ़ाने में सहायक : प्रो. बीआर काम्बोज

## हकृवि ने जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनी के साथ किया समझौता

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इंप्रूवमेंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है, इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है। दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम का टीका, अनाज, फल, फूल एवं सब्जियों के लिए ऐजाटोबैक्टर का टीका सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायोफर्टिलाइजर यूनिट में तैयार किए जाते हैं। ये टीके वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ग्रहण कर पौधों को प्रदान करते हैं। जीवाणु खाद भी वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पौधों तक पहुंचाने का कार्य करती है और रासायनिक खादों जैसी यूरिया व डीएपी की आवश्यकताओं को कम करती है। यह पहल मृदा की उर्वरकता बढ़ाने, फसल उत्पादन में वृद्धि करने और किसानों की आय में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी।

उन्होंने बताया कि सभी फसलों को फास्फोरस उपलब्ध कराने हेतु फास्फो टीका भी उपलब्ध है। कपास व गेहूं में सूत्र कृमि रोग की रोकथाम हेतु बायोटिका का प्रयोग भी काफी सक्षम रहा है। हैबिटेट जीनोम इंप्रूवमेंट प्राइवेट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड हिसार के चेयरमैन सतीश कुमार ने बताया कि एचएयू के साथ किए गए समझौते के अंतर्गत कंपनी को सूक्ष्म जीव विज्ञान की बायोफर्टिलाइजर प्रयोगशाला का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की गई है।

इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डा. पवन कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता डा. केडी शर्मा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश कुमार, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकारी डा. योगेश जिंदल, डा. रेणू मुंजाल, डा. जितेन्द्र भाटिया, डा. अनुराग, बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट प्रभारी डा. अनुज राणा, हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुख्य तकनीकी अधिकारी डा. एचआर शर्मा उपस्थित रहे।

निजी कंपनी के अधिकारियों के साथ मौजूद हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज • पीआरओ

### महंगे बीज और रासायनिक खादों के उपयोग के बावजूद घटती जा रही पैदावार

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि वर्तमान समय में महंगे बीज और रासायनिक खादों के बावजूद घटती पैदावार चिंता का विषय है, जिसका मुख्य कारण मृदा की घटती जा रही ताकत है। ऐसे में जैविक तत्वों व लाभदायक जीवाणुओं का संतुलन बनाकर टिकाऊ खेती को अपनाना समय की मांग है। यह साझेदारी न केवल हरियाणा बल्कि देश भर के किसानों के लिए एक नई शुरुआत है जो सतत एवं पर्यावरण अनुकूल खेती को प्रोत्साहित करेगी। बायोफर्टिलाइजर तकनीक पर्यावरण के अनुकूल व कम लागत वाली है। इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहड़वा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 7-6-25 | 3 | 5-6 |

## जीवाणु खाद मृदा की उपजाऊ शक्ति व फसल की पैदावर बढ़ाने में सहायक : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्प्रुवमेंट प्राईमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा। प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है। इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है। यह पहल मृदा की उर्वरकता बढ़ाने, फसल उत्पादन में वृद्धि करने और किसानों की आय में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया वर्तमान समय में महंगे बीज और रासायनिक खादों के बावजूद घटती पैदावार चिंता का विषय है। समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 7-6-25 | 4 | 5-6 |

# जीवाणु खाद मृदा की उपजाऊ शक्ति व फसल की पैदावर बढ़ाने में सहायकः प्रो. काम्बोज

हिसार, 6 जून (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्प्रुवमेंट प्राईमरी.प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कंपनी के अधिकारियों के साथ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है, इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि वर्तमान समय में महंगे बीज और रासायनिक खादों के बावजूद घटती पैदावार चिंता का विषय है, जिसका मुख्य कारण मृदा की घटती जा रही ताकत है। ऐसे में जैविक तत्वों व लाभदायक जीवाणुओं का संतुलन बनाकर टिकाऊ खेती को अपनाना समय की मांग है। यह साझेदारी न केवल हरियाणा बल्कि देश भर के किसानों के लिए एक नई शुरुआत है जो सत्तत एवं पर्यावरण अनुकूल खेती को प्रोत्साहित करेगी। इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहडवा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 7.6.25 | 4 | 3-6 |

# जीवाणु खाद उपजाऊ शक्ति बढ़ाने में सहायक

## एचएयू ने जीवाणु खाद के लिए निजी क्षेत्र की कंपनी के साथ किया समझौता

संवाद न्यूज एजेंसी

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज कंपनी के अधिकारियों के साथ। स्रोत : संस्थान

**हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्प्रूवमेंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि जीवाणु खाद मृदा की उपजाऊ शक्ति व फसल की पैदावर बढ़ाने में सहायक होता है। यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी।

उन्होंने कहा कि दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम का टीका, अनाज, फल, फूल एवं सब्जियों के लिए ऐजाटोबैक्टर का टीका सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायोफर्टिलाइजर यूनिट में तैयार किए जाते हैं। ये टीके वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ग्रहण कर पौधों को प्रदान करते हैं।

इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए, जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहडवा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, डॉ. केडी शर्मा, डॉ. रमेश कुमार मौजूद रहे।

| चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय |
|---|

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 7-6-25 | 5 | 1-3 |


# जीवाणु खाद मृदा की उपजाऊ शक्ति व फसल की पैदावार बढ़ाने में सहायक : प्रो. काम्बोज

## हकृवि ने जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनी के साथ किया समझौता

हिसार, 6 जून (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्प्रुवमेंट प्राईमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है, इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है। दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम का टीका, अनाज, फल, फूल एवं सब्जियों के लिए ऐजाटोबैक्टर का टीका सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायोफर्टिलाइजर यूनिट में तैयार किए जाते हैं। ये टीके वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ग्रहण कर पौधों को प्रदान करते हैं। जीवाणु खाद भी वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पौधों तक पहुंचाने का कार्य करती है और रासायनिक खादों जैसी यूरिया व डीएपी की आवश्यकताओं को कम करती है। यह पहल मृदा की उर्वरकता बढ़ाने, फसल उत्पादन में वृद्धि करने और किसानों की आय में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने बताया कि सभी फसलों को फार्स्फोरस उपलब्ध कराने हेतु फास्फोटीका भी उपलब्ध है। कपास व गेहूं में सूत्रकृमि रोग की रोकथाम हेतु बायोटिका का प्रयोग भी काफी सक्षम रहा है। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि वर्तमान समय में महंगे बीज और रासायनिक खादों के बावजूद घटती पैदावार चिंता का विषय है, जिसका मुख्य कारण मृदा की घटती जा रही ताकत है। ऐसे में जैविक तत्वों व लाभदायक जीवाणुओं का संतुलन बनाकर टिकाऊ खेती को अपनाना समय की मांग है। यह साझेदारी न केवल हरियाणा बल्कि देश भर के किसानों के लिए एक नई शुरुआत है जो सत्तत एवं पर्यावरण अनुकूल खेती को प्रोत्साहित करेगी। बायोफर्टिलाइजर तकनीक पर्यावरण के अनुकूल व कम लागत वाली है। इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहडवा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए।

## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि भूमि | 7-6.25 | 12 | 5-8 |

### हकृवि ने जीवाणु निजी क्षेत्र की कंपनी के साथ किया समझौता

# जीवाणु खाद मृदा की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने में सहायक

**हरिभूमि न्यूज ▶▶हिसार**

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्प्रुवमेंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन बारे एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कंपनी के अधिकारियों के साथ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बीआर काम्बोज ने बताया कि यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की. जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है, इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है। दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम का टीका, अनाज, फल, फूल एवं सब्जियों के लिए ऐजाटोबैक्टर का टीका सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायोफर्टिलाइजर यूनिट में तैयार किए जाते हैं। ये टीके वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ग्रहण कर पौधों को प्रदान करते हैं।

इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहडवा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेंणु मुंजाल, डॉ. जितेन्द्र भाटिया, डॉ. अनुराग, बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट प्रभारी डॉ. अनुज राणा, हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. एचआर शर्मा उपस्थित रहे।

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| नभ छोर | 6.6.2025 | -- | -- |

# यूरिया व डीएपी की आवश्यकताओं को कम करती है जीवाणु खाद : प्रो. काम्बोज

नभ-छोर न्यूज ⏭ 06 जून

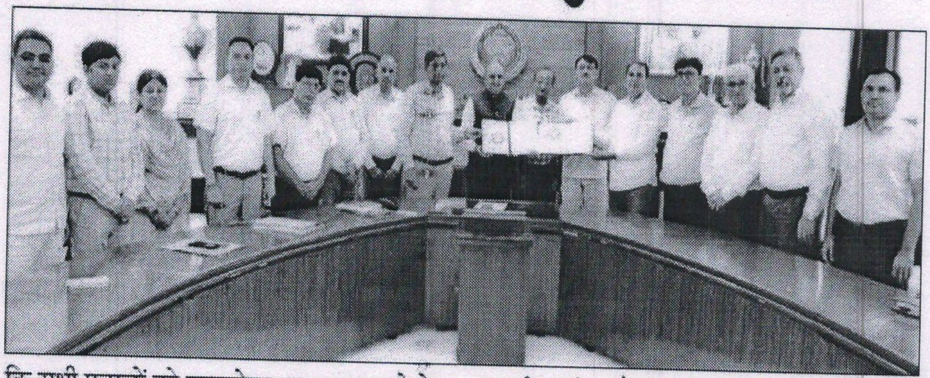

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्युवमेंट प्राईमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है, इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है। दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम का टीका, अनाज, फल, फूल एवं सब्जियों के लिए ऐजाटोबैक्टर का टीका सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायोफर्टिलाइजर यूनिट में तैयार किए जाते हैं। ये टीके वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ग्रहण कर पौधों को प्रदान करते हैं। जीवाणु खाद भी वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पौधों तक पहुंचाने का कार्य करती है और रासायनिक खादों जैसी यूरिया व डीएपी की आवश्यकताओं को कम करती है। यह पहल मृदा की उर्वरकता बढ़ाने, फसल उत्पादन में वृद्धि करने और किसानों की आय में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने बताया कि सभी फसलों को फास्फोरस उपलब्ध कराने हेतु फास्फोटीका भी उपलब्ध है। कपास व गेहूं में सूत्रकृमि रोग की रोकथाम हेतु बायोटिका का प्रयोग भी काफी सक्षम रहा है। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि वर्तमान समय में महंगे बीज और रासायनिक खादों के बावजूद घटती पैदावार चिंता का विषय है, जिसका मुख्य कारण मृदा की घटती जा रही ताकत है। ऐसे में जैविक तत्वों व लाभदायक जीवाणुओं का संतुलन बनाकर टिकाऊ खेती को अपनाना समय की मांग है। यह साझेदारी न केवल हरियाणा बल्कि देश भर के किसानों के लिए एक नई शुरूआत है जो सत्तत एवं पर्यावरण अनुकूल खेती को प्रोत्साहित करेगी। बायोफर्टिलाइजर तकनीक पर्यावरण के अनुकूल व कम लागत वाली है। इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहडवा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए। सतीश कुमार ने बताया कि एचएयू के साथ किए गए समझौते के अंतर्गत कंपनी को सूक्ष्म जीव विज्ञान की बायोफर्टिलाइजर प्रयोगशाला का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की गई है। जिससे जैव उर्वरकों के शोध उत्पादन और उनके प्रचार-प्रसार में सहयोग सुनिश्चित किया जा सके। इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, डॉ. केडी शर्मा, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणु मुंजाल, डॉ. जितेन्द्र भाटिया, डॉ. अनुराग, डॉ. अनुज राणा, डॉ. एचआर शर्मा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स | 6.6.2025 | -- | -- |


# जीवाणु खाद मृदा की उपजाऊ शक्ति व फसल की पैदावर बढ़ाने में सहायक : प्रो. काम्बोज

**सिटी पल्स न्यूज, हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हैबिटेट जीनोम प्राइवेट इम्पुवमेंट प्राईमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ जीवाणु खाद उत्पादन को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन यूनिट में वैज्ञानिकों की मदद से गुणवत्ता युक्त जीवाणु खाद का उत्पादन बढ़ाया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह साझेदारी किसानों तक उच्च गुणवत्तायुक्त की जीवाणु खाद पहुंचाने में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पहले से ही फसलों के अनुसार उपयुक्त जीवाणु की पहचान कर ली गई है, इन जीवाणुओं से फसल उत्पादन में काफी सहायता मिली है।

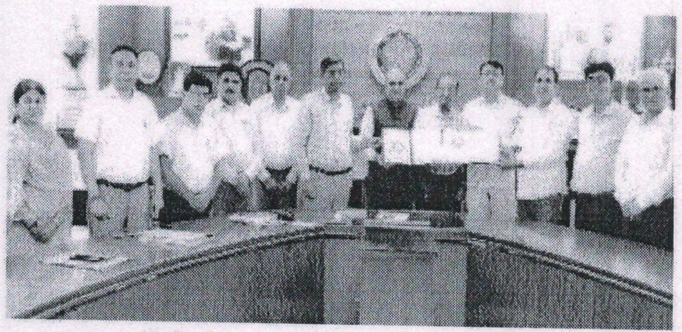
कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कपनी के अधिकारियों के साथ

दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम का टीका, अनाज, फल, फूल एवं सब्जियों के लिए ऐजाटोबैक्टर का टीका सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के बायोफर्टिलाइजर यूनिट में तैयार किए जाते हैं। ये टीके वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ग्रहण कर पौधों को प्रदान करते हैं। जीवाणु खाद भी वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पौधों तक पहुंचाने का कार्य करती है और रासायनिक खादों जैसी यूरिया व डीएपी की आवश्यकताओं को कम करती है। यह पहल मृदा की उर्वरकता बढ़ाने, फसल उत्पादन में वृद्धि करने और किसानों की आय में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने बताया कि सभी फसलों को फास्फोरस उपलब्ध कराने हेतु फास्फोटीका भी उपलब्ध है। कपास व गेहूं में सूत्रकृमि रोग की रोकथाम हेतु बायोटिका का प्रयोग भी काफी सक्षम रहा है।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि वर्तमान समय में महंगे बीज और रासायनिक खादों के बावजूद घटती पैदावार चिंता का विषय है, जिसका मुख्य कारण मृदा की घटती ताकत है। जैविक तत्वों व लाभदायक जीवाणुओं का संतुलन बनाकर टिकाऊ खेती को अपनाना समय की मांग है। यह साझेदारी न केवल हरियाणा बल्कि देश भर के किसानों के लिए नई शुरुआत है जो सत्तत एवं पर्यावरण अनुकूल खेती को प्रोत्साहित करेगी। बायोफर्टिलाइजर तकनीक पर्यावरण के अनुकूल व कम लागत वाली है। इस समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने हस्ताक्षर किए जबकि हैबिटेट जीनोम प्राइवेट लिमिटेड की ओर से एमडी सुरेंद्र सिंह स्याहडवा व चेयरमैन सतीश कुमार ने हस्ताक्षर किए।